**E-Learning material prepared by Dr.Abha Jha, Asstt.Prof.&Head, University Dept. of Philosophy, Dr.Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi, Jharkhand.**

# वेदों में सृष्टि की अवधारणा

Dr.Abha Jha
Asst.Prof.&Head
Dept. of Philosophy
DSPMU,Ranchi

वेदों में जगत की रचना के संबंध में अनेक कल्पनाएं पाई जाती हैं किंतु सामान्यतः प्रजापति को ही जगत का स्रष्टा कहा गया है. उसी प्रजापति की इंद्र, वायु, सूर्य आदि के रूप में स्तुति की गयी है . हिरण्यगर्भ सूर्य के रूप में प्रजापति माना जाता है. वह एक होते हुए भी अनेक नामों वाला है, इसीलिए प्रारंभ में वेदों में बहुदेववाद की स्थापना हुई अर्थात अनेक देवों की सत्ता में आस्था का आरंभ हुआ.

ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में सृष्टि प्रक्रिया का विशद वर्णन किया गया है. नासदीय सूक्त के अनुसार सृष्टि के आरंभ में ना आकाश,ना ही अंतरिक्ष था. मृत्यु भी नहीं थी. नासदीय सूक्त के अनुसार सृष्टि के प्रारंभ में अंधकार ही अंधकार था. वह अंधकार कुछ गहन और कुछ गंभीर समुद्र सा था . सब कुछ शून्य से आवृत था. वहां न मृत्यु थी, न अमरता, न दिन, न रात और न किसी प्रकार का प्रकाश ही था. उस समय न सत् था , न असत था , न अंतरिक्ष था, न व्योम. चारों ओर घोर अंधकार छाया हुआ था. केवल वह 'एक' था. 'तपस' से उस एक की उत्पत्ति हुई . तपस एक अव्यक्त चेतन था. उससे ही सृष्टि हुई

वेदों में जगत के सर्जक परमात्मा हैं जिसे इंद्र, सूर्य, हिरण्यगर्भ या प्रजापति के रूप में कल्पित किया गया है .सृष्टि के पहले केवल शून्य, चारों ओर निस्तब्धता थी. परम तत्व परमात्मा ने अपनी शक्ति से एक दिव्य रूप पैदा किया जो अग्नि के गोले के समान देदीप्यमान था. वही सूर्य या 'हिरण्यगर्भ ' कहलाया . हिरण्यगर्भ ( सुनहरे

गर्भ वाला ) पहले था. वह भूत का अकेला स्वामी कहा गया . उसके पैदा होते ही सारा अंधकार नष्ट हो गया. निस्तब्धता  समाप्त हो गई और प्रकृति में एक ऐसा विचित्र कंपन्न हुआ जिससे एक दिव्यलोक  की उत्पत्ति हुई. यह द्यावापृथ्वी के नाम से प्रसिद्ध हुआ .इसके साथ ही आधारभूत जल तत्व की सृष्टि हुई. इसी हिरण्यगर्भ से अनेक देवी-देवता उत्पन्न  हुए. इस प्रकार सृष्टि अर्थात जगत की उत्पत्ति एवं संरचना प्रारंभ हुई .

सृष्टि की कल्पना के विषय में ऋग्वेद का पुरुष सूक्त भी महत्वपूर्ण है. इसके अनुसार जगत की सृष्टि प्राकृतिक उत्पत्ति है और देवी देवता सृष्टि में केवल सहायक माने गए हैं. प्रजापति एक विराट पुरुष है .उसका शरीर जगत का उपादान  आधार है. जितने भी जगत के विभिन्न भाग हैं वे उस विराट पुरुष के ही अंग है. वह त्रैकालिक पुरुष कहा गया है जिसे ब्राह्मण ग्रंथों में प्रजापति, उपनिषदों में आत्मा, इत्यादि कहा गया है. इस विराट पुरुष का मस्तक आकाश, नाभि वायु, चरण भूलोक, मन चंद्रमा, चक्षु सूर्य और नि:श्वास को पवन के रूप में कल्पित किया गया है. अथर्ववेद में काल को समस्त जगत का सृष्टा माना गया है .एक अन्य स्थान पर रोहित अर्थात उगते हुए सूर्य को सृष्टि का प्रथम तत्व स्वीकार किया गया है. उस  एक तेजस तत्व परमात्मा में काम( इच्छा) उत्पन्न हुई जो सृष्टि का प्रथम बीज  था.

एक अन्यत्र स्थान पर जगत स्रष्टा को बढ़ई के समान कहा गया है . कोई बढ़ई जसे काष्ठ के उपकरणों से भवन का निर्माण करता है उसी प्रकार प्रजापति ने विश्वकर्मा के रूप में इस सृष्टि का निर्माण किया है. यही  प्रजापति जन्म देने वाला, पालन करने वाला विधाता है. वह सभी लोगों तथा स्थानों का ज्ञाता है. जगत सृष्टा प्रजापति या परमात्मा की चारों ओर आंखें हैं, चारों ओर मुंह ,भुजाएं तथा पैर हैं. वही अकेला,अजन्मा पृथ्वी का निर्माण करता है . उसने सर्वप्रथम जन्म को धारण किया. वह परमात्मा है, और वही आत्मा के रूप में हमारे निकट है अर्थात वह जीवात्मा के रूप में मनुष्यों के नजदीक है.

नासदीय सूक्त से स्पष्ट होता है कि सृष्टि के आरंभ में कोई एक चेतन पदार्थ था जिससे संपूर्ण जगत की सृष्टि हुई .उपनिषदों  छांदोग्य उपनिषदमें भी सृष्टि से पहले

एक सत्य की कल्पना मिलती है. वस्तुतः यही वह सर्वव्यापी शक्ति है जिसकी विभिन्न अभिव्यक्तियों  में संसार की सृष्टि होती है. इसी व्यापक परम शक्ति का वर्णन अभय ज्योति ,परम व्योमन, अव्यक्त आदि भिन्न-भिन्न नामों से वेद मंत्रों में मिलता है.

ऋग्वेद में सृष्टि निर्माण के संदभ में सारी महत्वपुर्ण बातों का निष्पादन करते हुए कहा गया है कि इस जगत के स्रष्टा ईश्वर ने अपने नाभिमंडल में एक अंड की स्थापना की और उसी अंड में यह ब्रह्माण्ड अवस्थित है .उस परमेश्वर को जनसामान्य पहचानते नहीं हैं . वही परमात्मा जीवात्मा के रूप में हमारे पास है , किन्तु वह परमात्मा इससे परे है .

नासदीय सूक्त में हमें उपनिषदों के ऐक्यवाद का संकेत मिलता है. आचार्य शंकर के अनुसार वेदों में सृष्टि प्रक्रिया का तात्पर्य केवल  ब्रह्मात्मैक्य का प्रतिपादन करना है.

...............................

डॉआभा